जलीय पर्यावरण एवं स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग ,भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तत्वावधान में 14 अगस्त 2024 को पर्यावरण प्रभाव आकलन में छात्रों के लिए उद्यमिता की संभावनाएं ; पर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया ।

कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों को पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) के सिद्धांतों और प्रथाओं से परिचित कराना और उन्हें इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में करियर बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करना था । इसमें विभिन्न मत्स्य महाविद्यालयों और संस्थानों से ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों तरह के प्रतिभागियों सहित 119 पुरुष (68) और महिला (51) प्रतिभागी थे । यह कार्यक्रम भाकृअनुप-सीआईएफई के निदेशक/कुलपति डॉ. रविशंकर सी.एन. और संयुक्त निदेशक और प्रधान अन्वेषक डॉ. एन.पी. साहू के संरक्षण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम संयोजक, डॉ. एस.पी. शुक्ला, प्रधान वैज्ञानिक और कार्यक्रम सह-संयोजक, आईसीएआर-सीआईएफई। आयोजक सचिव डॉ. कुंदन कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एईएचएम डिवीजन और डॉ. सौरव कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफई थे । कार्यशाला में प्रतिष्ठित वक्ताओं डॉ. एम. कार्तिक, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान, एमवी किनी लॉ से श्रीमती गौतमबाला नंदेश्वर, आईसीएआर-सीआईएफई से डॉ. कुंदन कुमार, आदित्य पर्यावरण सेवा प्राइवेट लिमिटेड से श्री एन.के. शेंडे और सेंटर फॉर सस्टेनेबल एनवायरनमेंट एंड डेवलपमेंट इनिशिएटिव्स से डॉ. प्रमोद डबरासे द्वारा ज्ञानवर्धक सत्र आयोजित किए गए । इन विशेषज्ञों ने ईआईए के तकनीकी, कानूनी और उद्यमशीलता पहलुओं पर तकनीकी सत्रों में अपने विचार साझा किए, जिससे छात्रों को सतत विकास में इस क्षेत्र के महत्व की व्यापक समझ मिली ।

डॉ. मेघा कदम बेडेकर ने कार्यशाला कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, अतिथि वक्ताओं, संकायों और छात्रों का स्वागत किया और ईआईए में दस्तावेज़ीकरण प्रक्रियाओं में कौशल विकास की विशिष्टता पर प्रकाश डाला। डॉ. एस.पी. शुक्ला ने कार्यशालाओं के अवलोकन और अकादमिक शिक्षा और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटने में पहल के महत्व के बारे में जानकारी दी । डॉ. एन.पी. साहू, संयुक्त निदेशक और पीआई, एनएएचईपी-आईसीएआर-सीआईएफई ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ईआईए और पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में पर्यावरण छात्रों के लिए उपलब्ध विशाल संभावनाओं पर प्रकाश डाला ।

तकनीकी सत्र में, नीरी, नागपुर के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. कार्तिक ने "पर्यावरण प्रभाव आकलन अध्ययन की आवश्यकता, इसका परिवर्तन और वास्तविकताएँ" पर व्याख्यान दिया। उन्होंने पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) अध्ययनों की महत्वपूर्ण आवश्यकता, उनके विकास और उनके कार्यान्वयन के दौरान सामना की जाने वाली वास्तविकताओं पर ध्यान केंद्रित किया । उन्होंने ईआईए आयोजित करने की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया, सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए किसी परियोजना के कार्यान्वयन से पहले पर्यावरणीय प्रभावों का आकलन करने के महत्व पर जोर दिया। प्रस्तुति का एक प्रमुख पहलू रैपिड ईआईए (आरईआईए) और व्यापक ईआईए (सीईआईए) के बीच का अंतर था । कुल मिलाकर, प्रस्तुति ने ईआईए प्रक्रिया का एक व्यापक अवलोकन प्रदान किया, जिसमें सतत विकास को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डाला गया। अगला व्याख्यान एडवोकेट गौतमबाला एन.एस. ने "कानूनी, नीति और नियामक ढांचे" पर दिया। उन्होंने भारत में पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) को रेखांकित करने वाली कानूनी संरचनाओं के विस्तृत पहलुओं को प्रस्तुत किया । उन्होंने भारतीय संविधान में पर्यावरण संबंधी प्रावधानों, खास तौर पर अनुच्छेद 48-ए और 51-ए पर प्रकाश डाला, जो पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए राज्य की जिम्मेदारी और नागरिकों के कर्तव्य को रेखांकित करते हैं। कुल मिलाकर, सत्र में विकासात्मक गतिविधियों को टिकाऊ और पर्यावरण की दृष्टि से सही सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत कानूनी ढांचे के महत्व को रेखांकित किया गया ।

अगला व्याख्यान आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुंदन कुमार ने "ईआईए पर छात्रों का दृष्टिकोण" विषय पर दिया । उन्होंने मत्स्य पालन क्षेत्र के दायरे और जलीय पर्यावरण प्रबंधन (एईएम) में एमएफएससी और पीएचडी में पेश किए जाने वाले विशेष पाठ्यक्रमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने एईएम छात्रों के शोध कार्य के अनुसंधान क्षेत्रों और परिणामों को रेखांकित किया, विशेष रूप से प्रदूषण को दूर करने के लिए शमन उपायों को विकसित करने में। उन्होंने उच्च प्रभाव वाले शोध को प्रकाशित करने के महत्व पर बल दिया और ई-कचरा प्रबंधन, विषाक्तता मूल्यांकन और शमन मॉडल के विकास जैसे मुद्दों से निपटने के लिए संस्थान की नई पहल की शुरुआत की। श्री एन.के. शेंडीस ने ईआईए में केस अध्ययन पर ईआईए की मूल बातें और वैधानिक आवश्यकताओं का एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया सत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गुजरात के गिर सोमनाथ जिले में माधवड़ मत्स्य बंदरगाह परियोजना के लिए आयोजित ईआईए का विस्तृत केस अध्ययन था। श्री शेंडे ने आदित्य पर्यावरण में मास्टर छात्रों के लिए इंटर्नशिप के अवसरों के बारे में बताया। पाँचवाँ व्याख्यान डॉ. प्रमोद डबरासे ने "मत्स्य पालन और पर्यावरण में छात्रों के लिए अवसर" पर दिया । उन्होंने पर्यावरण में सूक्ष्म प्रदूषकों पर बढ़ती चिंता और स्थिरता के महत्व

पर प्रकाश डाला । उन्होंने ईआईए क्षेत्र के भीतर उद्यमशीलता की संभावना पर जोर दिया, मांग, अवसरों और लचीलेपन पर जोर दिया। उन्होंने नियामक निकायों में विभिन्न कैरियर के अवसरों को रेखांकित किया और उच्च अध्ययन के लिए अंतरराष्ट्रीय संगठनों और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शोध संस्थानों की एक सूची प्रदान की ।

सत्र में मत्स्य पालन और पर्यावरण अध्ययन में छात्रों के लिए उपलब्ध विविध अवसरों को रेखांकित किया गया, जिसमें उद्यमिता से लेकर अनुसंधान और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी में भूमिकाएं शामिल हैं । पैनल ने स्पष्ट किया कि ईआईए संसद के वैधानिक अधिकार पर आधारित एक अधिसूचना है, जो इसके कानूनी आधार पर प्रकाश डालती है । इसके अलावा पैनल ने ईआईए 2020 अधिसूचना में खामियों पर उठाए गए सवाल का जवाब दिया, कि ईआईए 2020 अधिसूचना अभी भी लंबित है और अभी तक लागू नहीं हुई है, यह दर्शाता है कि उठाई गई चिंताओं को अभी तक आधिकारिक रूप से संबोधित नहीं किया गया है । पैनल ने सुझाव दिया कि संबंधित क्षेत्र में स्थापित उद्योगों के साथ काम करके एक्सपोजर प्राप्त करना महत्वपूर्ण है और रुचि का विशिष्ट क्षेत्र उम्मीदवारों को उनके करियर पथ में मार्गदर्शन करेगा। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण कुछ महत्वपूर्ण सिफारिशें हैं जैसे 1) उद्यमिता विकास और करियर के अवसरों के विषय के रूप में पर्यावरण पर ध्यान केंद्रित करने वाली लगातार विशेष कार्यशालाएं और विचार-मंथन सत्र और 2) नकली ईआईए दस्तावेज़ लेखन के लिए व्यावहारिक कार्यशाला ।

कार्यशाला का समापन आयोजन सचिव डॉ कुंदन कुमार द्वारा प्रस्तुत एक व्यापक सारांश के साथ हुआ, सारांश के बाद प्रतिभागियों से फीडबैक एकत्र किया गया। अपने समापन भाषण में संरक्षक डॉ. एन.पी. साहू ने सुझाव दिया कि छात्रों को ईआईए जैसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दों की समझ बढ़ाने के लिए इस तरह की बैठकें अक्सर आयोजित की जानी चाहिए। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों का समन्वयन आयोजन सचिव डॉ. सौरव कुमार ने किया और कार्यक्रम का औपचारिक समापन डॉ. कुंदन कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जो पर्यावरण क्षेत्र में ज्ञान और अवसरों के साथ छात्रों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है ।

TM